जुलाई: 2023

वर्ष : 6 अंक : 10

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

"जो सही है उसे करने के लिए हर समय श्रेष्ठ समय है।" मार्टिन लूथर किंग जूनियर

संस्थान का मासिक न्यूज़लेटर का जुलाई 2023 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस अंक में जून, 2023 में संस्थान की गतिविधियों को दिखाया गया है।

राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस 10 जुलाई 2023 को प्रेरित प्रजनन तकनीक की सफलता के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। प्रो. हीरालाल चौधरी और डॉ. के.एच. अलीकुन्ही ने सर्वप्रथम 'प्रेरित प्रजनन तकनीक' का सफल प्रयोग किया था। उनके कठिन प्रयास के कारण मछलियों का प्रेरित प्रजनन संभव हो पाया जो देश के नीली क्रांति का एक अभिन्न आधार बना। डा. हीरालाल चौधुरी और डॉ. के.एच. अलीकुन्ही के इस अनोखे प्रयास के सम्मान में भारत सरकार ने वर्ष 1957 में 10 जूलाई को 'राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस' के तौर पर घोषित किया।

संस्थान में हर वर्ष 10 जुलाई को 'राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर कई प्रकार के कार्यक्रम जैसे संगोष्ठी, किसानों के साथ पारस्परिक संवाद तथा प्रगतिशील किसानों को सम्मानित करना आदि का आयोजन किया जाता है।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने पूर्व मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल में मछली रोग निगरानी और स्वास्थ्य प्रबंधन पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया

रोग निगरानी मत्स्य की स्वास्थ्य स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान करती है, जो नियंत्रण और उन्मूलन उपायों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, साथ ही मत्स्य रोग प्रबंधन के लिए प्रारंभिक चेतावनी, जोखिम मूल्यांकन, आकस्मिक योजनाओं और आपातकालीन तैयारी कार्यक्रम का समर्थन करती है। आईसीएआर- केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने प्रधान मंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (पीएमएमएसवाई) द्वारा वित्त पोषित एनएसपीएएडी चरण II परियोजना के तहत मछली रोग निगरानी और स्वास्थ्य प्रबंधन पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक आईसीएआर-सिफरी, की देखरेख में 1 जून 2023 को कोंटाई, पूर्व मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में कुल 32 मछुआरों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान, डॉ. विकाश कुमार आईसीएआर-सिफरी ने जलीय पर्यावरण के साथ-साथ रोगाणुरोधी प्रतिरोध मुद्दों, मछली रोग प्रबंधन की स्थिति, जलीय कृषि विकास के लिए स्थायी दृष्टिकोण आदि सहित मछली के रोग निगरानी और स्वास्थ्य प्रबंधन के कई क्षेत्रों पर सभा को बताया। बाद में, एनएसपीएएडी चरण II परियोजना की टीम के सदस्यों ने सभा को संबोधित किया और मछुआरों को मछली के स्वास्थ्य और कीमोथेरेपी प्रबंधन पर प्रेरित किया और मछुआरों को मछलियों में एंटीबायोटिक दवाओं और रसायनों के अंधाधुंध उपयोग के नकारात्मक प्रभाव के बारे में जानकारी दी। बाद में टीम ने सांस्कृतिक सुविधाओं का दौरा किया और किसानों को पानी की गुणवत्ता के महत्व और रोग के विकास और प्रकोप पर नैदानिक संकेतों के बारे में जागरूक किया।

रोग की पहचान और उनके संभावित प्रबंधन उपायों पर अंग्रेजी और बंगाली दोनों भाषाओं में जानकारी पुस्तिका तैयार किए गए और मछुआरों को उनके मछली फार्म के बेहतर प्रबंधन के लिए जागरूक करने के लिए प्रतिभागियों के बीच वितरित किए गए। डॉ. विकाश कुमार, श्री असीम कुमार जाना और एनएसपीएएडी चरण II परियोजना के शोध विद्वान श्री सौविक धर, श्री सत्यनारायण परिदा और श्री कम्पन बिसाई ने बड़ी कुशलता से कार्यक्रम का समन्वय किया।

संस्थान मुख्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए जागरूकता को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस (डब्ल्यूईडी) मनाया जाता है। इसे प्रदूषण, अधिक जनसंख्या, ग्लोबल वार्मिंग, सतत विकास और वन्यजीव संरक्षण जैसे पर्यावरणीय मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने के लिए संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा शुरू किया गया था। यह पहली बार 1973 में आयोजित किया गया था, तब से हर साल विश्व पर्यावरण दिवस दुनिया भर में मनाया जाता है। इस वर्ष का थीम प्लास्टिक प्रदूषण को हराएँ (बीट प्लास्टिक पॉल्यूशन) था।

हर साल की तरह, भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफ़री) ने 5 जून, 2023 को उत्साहपूर्वक विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। पूर्वाह्न में, संस्थान ने आम जनता को प्लास्टिक और प्लास्टिक प्रदूषण के हानिकारक प्रभाव के बारे में जागरूक करने के लिए

गंगा नदी के किनारे शेओराफुली घाट, बैरकपुर में एक रैली और जागरूकता-सह-संवेदनीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया। आवासीय परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम में संस्थान के स्टाफ सदस्यों द्वारा विभिन्न प्रकार के फलों के पौधे जैसे गुलाब सेब (*साइजियम जंबोस*), आम (*मंगिफेरा इंडिका*), भारतीय शर्बत बेरी/ फालसा (*ग्रेविया एशियाटिका*), माल्टा (*साइट्रस साइनेंसिस*) लगाए गए।

दोपहर के सत्र में, सिफ़री, मुख्यालय के नए सभागार भवन में व्याख्यानों की एक श्रृंखला आयोजित की गई। 210 से अधिक प्रतिभागियों ने ऑनलाइन और ऑफलाइन

मोड के माध्यम से व्याख्यान में भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. एम.ए हसन के स्वागत भाषण से हुई। उसके बाद डॉ. आर.के. मन्ना ने "नदियों में प्लास्टिक प्रदूषण" पर व्याख्यान दिया और डॉ. धुर्व ज्योति सरकार ने "प्लास्टिक और माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण" पर जानकारीपूर्ण व्याख्यान दिया। कल्याणी विश्वविद्यालय के प्रो. (डॉ.) जयंत कुमार विश्वास इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे और थीम क्षेत्र "बीट प्लास्टिक पॉल्यूशन" पर एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। व्याख्यान के बाद एक आलोचना सत्र भी आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का समापन कार्यभारी निदेशक डॉ. श्रीकांत सामंता के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

पूरे कार्यक्रम का आयोजन सिफ़री के निदेशक डॉ. बि .के. दास के मार्गदर्शन में कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एम.ए. हसन द्वारा सफलतापूर्वक किया गया।

ओडिशा के परजंग ब्लॉक के मछली किसानों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 06 से 10 जून, 2023 के दौरान परजंग ब्लॉक, ढेंकनाल, ओडिशा के मछली किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर ए.टी.एम.ए प्रायोजित पांच दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में परजंग ब्लॉक के कुल 42 मछली किसानों ने भाग लिया। यह प्रशिक्षण वैज्ञानिक तरीकों से मछली पालन पर किसानों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए आयोजित किया गया था। मछली पालन के विभिन्न पहलुओं जैसे तालाब निर्माण और प्रबंधन, नर्सरी और पालन प्रबंधन, मछली रोग प्रबंधन, एकीकृत मछली पालन आदि पर ज्ञान प्रदान किया गया। इसके अलावा, प्रशिक्षुओं को सजावटी मछली पालन इकाई और बायोफ्लॉक कार्यात्मक इकाई के बारे में भी जानकारी दी गई।

इसके अलावा, प्रशिक्षण कार्यक्रम के हिस्से के रूप में आईसीएआर-एनबीएसएसएलयूपी फील्ड स्टेशन, कोलकाता, आईसीएआर-सीआरआईजेएएफ, बैरकपुर, सीआईएफई, कोलकाता केंद्र और नादिया में मछली फार्म के दौरे का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने किसानों के साथ बातचीत की और उन्हें प्रशिक्षण के माध्यम से अपना ज्ञान विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. दास ने मछली पालन के माध्यम से घर के पिछवाड़े के तालाबों सहित कम उपयोग किए जाने वाले जल संसाधनों का वैज्ञानिक तरीके से उपयोग करने पर जोर दिया, जो आजीविका में सुधार की पर्याप्त गुंजाइश प्रदान करता है। क्षमता निर्माण कार्यक्रम का उद्देश्य खुले जल में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों के व्यावहारिक कौशल को मजबूत करना था। कक्षा के अलावा ऑन-फील्ड एक्सपोज़र विजिट और फ़ील्ड प्रदर्शनों के माध्यम से तालाबों और टैंकों का उपयोग मछली पालन के लिए करना आदि सिखाया गया। यह अनुमान लगाया गया है कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रशिक्षुओं के आजीविका सुधार में सकारात्मक प्रभाव रहेगा।

अनुसूचित जनजाति घटक के अंतर्गत छत्तीसगढ़ में पेन कल्चर प्रदर्शन सह जागरूकता कार्यक्रम

छत्तीसगढ़ मध्य भारत में स्थित एक भूमि से घिरा और घने जंगलों वाला राज्य है। राज्य में कुल बयालीस (42) अनुसूचित जनजातियाँ हैं। जनगणना, 2011 के अनुसार, छत्तीसगढ़ में भारत की लगभग 7.5 प्रतिशत आदिवासी आबादी है और आदिवासी लोग राज्य की आबादी का लगभग 30 प्रतिशत हैं। आईसीएआर-सिफरी ने मत्स्य पालन विभाग, छत्तीसगढ़ के साथ हाथ मिलाकर छत्तीसगढ़ की आदिम जनजातीय आबादी की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने की पहल की है।

जलाशय और बांध इस राज्य के प्रमुख अंतर्स्थलीय खुले जल संसाधन हैं। आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने चयनित जलाशयों की प्राथमिक मछुआरा सहकारी समितियों (पीएफसीएस) को शामिल करके भागीदारी मोड के माध्यम से छत्तीसगढ़ के छोटे जलाशयों में मछली उत्पादन वृद्धि कार्यक्रम शुरू किया है। संस्थान ने छत्तीसगढ़ के दस चयनित छोटे जलाशयों (टौरेंगा, बहेराखार, सुतियापाठ, मटियामोती, कोसरटेडा, राबो, घुनघुट्टा, गेज, केशवानाला) में बीस पेन, दस इंजन वाली नावें, बीस कोरेकल और बीस टन सीआईएफआरआई केज ग्रो फ़ीड उपलब्ध कराया गया। पेन कल्चर हस्तक्षेप जलाशय में यथास्थान मछली बीज उगाने का एक उपकरण है जिससे न केवल जलाशय के उत्पादन में सुधार होगा बल्कि उत्पादन की लागत भी कम होगी, जिसके बाद मछुआरों की आजीविका में सुधार होगा। आईसीएआर

-सिफरी ने जिला मत्स्य अधिकारी, छत्तीसगढ़ के सहयोग से पांच छोटे जलाशयों में पेनकल्चर प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया। 24 मई से 4 जून, 2023 के दौरान राज्य के बहेराखार, सुतियापाठ, राबो, परलकोट और घुनघुट्टा में जलाशय के उत्पादन को लागत प्रभावी ढंग से बढ़ाने के लिए पेन में सीटू फिंगरलिंग बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है। दो वैज्ञानिक टीमों ने चयनित जलाशयों में सीआईएफआरआई एचडीपीई स्थापना और भंडारण का प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के बाद जलाशयों में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए पेन कल्चर के महत्व के बारे में लाभार्थियों को जागरूक करने के लिए जलाशय स्थल पर संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रदर्शन सह जागरूकता कार्यक्रम में कुल 340 आदिवासी लाभार्थियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन प्रधान वैग्यानिक डॉ.ए. के. दास ने किया। डॉ. बि.के. दास, निदेशक, सिफरी के मार्गदर्शन में श्री सतीश कौशलेश, वैज्ञानिक; और संस्थान के श्री कौशिक मंडल, तकनीकी सहायक, श्री एस. देबनाथ, श्री सूरज चौहान और श्री स्निग्धो देब बर्मा द्वारा सहायता प्रदान की गई।

सिफ़री ने पटना में रैन्चिंग सह जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सिफ़री), बैरकपुर ने गंगा नदी में मछली संरक्षण और बहाली के लिए पटना में "नमामि गंगे" कार्यक्रम के तहत 'राष्ट्रीय रैन्चिंग कार्यक्रम-2023' का आयोजन किया।

अब तक आईसीएआर-सिफ़री ने "नमामि गंगे" परियोजना के तहत गंगा नदी के विभिन्न हिस्सों में जो अलग-अलग भारतीय राज्यों से होकर बहती हैं, 88 लाख से अधिक मछलियों का रैन्चिंग किया हैं। इसी क्रम में बीएएसयू, पटना के माननीय कुलपति डॉ.रामेश्वर सिंह की उपस्थिति में राजघाट, पटना, बिहार में रैन्चिंग सह जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक और "नमामि गंगे" परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. बसंत कुमार दास ने गंगा नदी में मत्स्य पालन और संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। रोहू, कतला, मृगल और कालबासु के कुल 2.0 लाख कृत्रिम रूप से पैदा की गई अंगुलिमीनों के जर्मप्लाज्म को राजा घाट से गंगा नदी में छोड़ा गया। सभी

प्रजातियों में कतला 400 ग्राम के औसत आकार के साथ सबसे अधिक (60%) छोड़ा गया । इस कार्यक्रम में डॉ. कमल शर्मा, विभागाध्यक्ष, आईसीएआर-आरसीईआर पटना, श्री एन. जवाहर, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (जलवायु परिवर्तन और आर्द्रभूमि) और मत्स्य पालन विभाग, बिहार और सीआरपीएफ पटना के गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। आईसीएआर-सिफ़री के इन प्रयासों से देशी मछली जर्मप्लाज्म के संरक्षण के अलावा स्थानीय मछुआरों की आजीविका को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।

रैन्चिंग कार्यक्रम के अलावा, सिफ़री द्वारा एक जन जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया था, जहां 50 से अधिक स्थानीय मछुआरे उपस्थित थे । गंगा नदी में सतत मत्स्य पालन के लिए की गई इस पहल में भाग लेने के लिए सभी ने वादा किया।

इस कार्यक्रम में मछुआरों की सक्रिय भागीदारी देखी गई। इसके अलावा गंगा के स्थानीय मछुआरों को मछली पकड़ने के जाल का वितरण भी किया गया।

केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान द्वारा देवप्रयाग में गंगा नदी में महाशीर की अंगुलिकाए छोड़ी गयी

गंगा नदी की मछलियों के संरक्षण और पुनर्स्थापन के लिए राष्ट्रीय मत्स्य पालन कार्यक्रम के तहत आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा देवप्रयाग में 10,000 महशीर मछली के बच्चों को गंगा नदी में छोड़ा गया।

श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी, कुलपति, पतंजलि विश्वविद्यालय और सह संस्थापक पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार, डॉ. बि.के. दास, निदेशक, आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और डॉ. संदीप बेहरा वरिष्ठ सलाहकार जैव विविधता, नमामि गंगे परियोजना, की गरिमामय उपस्थिति में उन्नत आकार की फिंगरलिंग महशीर मछलियों का रेन्चिंग किया गया। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) परियोजना के तहत पंतजलि सेवाश्रम, मुल्या गांव, देवप्रयाग, उत्तराखंड के सहयोग से आयोजित किया गया था।

संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दस ने बताया कि आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई), बैरकपुर को गंगा नदी की विलुप्त हो रही मछलियों की बहाली और संरक्षण के लिए नमामि गंगे (एनएमसीजी) के तहत भारत सरकार द्वारा सौंपा गया है। लक्षित प्रजातियाँ ऊपरी हिस्से में महशीर, मध्य हिस्से में आईएमसी (रोहू, कतला, मृगल और कैलबासु) और निचले हिस्से में कीमती हिल्सा मछली हैं। राष्ट्रीय नदी पालन कार्यक्रम के तहत अब तक 90 लाख से अधिक मछली के बीज विभिन्न स्थानों पर छोड़े गए और 20 लाख से अधिक केवल पिछले दो महीनों में प्रवाहित किए गए हैं। आने वाले वर्षों में एक करोड़ से अधिक मत्स्य अंगुलिकाओं को प्रवाहित करने का लक्ष्य है।

इस अवसर के मुख्य अतिथि आचार्य श्री बालकृष्ण जी ने मानव सभ्यता के लिए गंगा नदी के महत्व को समझाया और इसे स्वच्छ रखने का आह्वान किया।

डॉ. संदीप बेहरा ने गंगा नदी के लिए नमामि गंगे कार्यक्रम के महत्व के बारे में जानकारी दी और हेमवती नंदन बहुगुणा विश्वविद्यालय के प्रोफेसर प्रकाश नौटियाल ने भी लोगों को संबोधित किया और गंगा नदी को बचाने का आग्रह किया। इस अवसर पर मत्स्य जालों को गंगा के किनारे रहने वाले मछुआरों के बीच वितरित भी किया गया। कार्यक्रम में तीर्थयात्रियों, छात्रों, आसपास के गांवों के मछुआरों, मछली व्यापारियों और अलकनंदा और भागीरथी के तट पर रहने वाले स्थानीय लोगों ने भाग लिया। केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. धर्म नाथ झा ने अतिथियों का स्वागत किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. वी. आर. ठाकुर ने किया। यह आश्वासन दिया गया कि समाज की भागीदारी से इस परियोजना के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त किया जाएगा।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने बिहार के जमुई जिले के मछली किसानों के लिए एक प्रशिक्षण का आयोजन

बिहार के जमुई जिले के मछली किसानों के लिए प्रौद्योगिकी प्रसार के साथ ज्ञान को बढ़ाने के लिए आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा 22-28 जून 2023 के दौरान "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। एक अंतर्स्थलीय राज्य होने के नाते, इसने अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन और मीठे पानी की जलीय कृषि को राज्य के लिए एक संभावित क्षेत्र के रूप में पहचाना है और सरकार अपने मत्स्य संसाधनों के दोहन और उपयोग को बढ़ावा देती है। प्रशिक्षण में कुल 28 मछुआरों ने भाग लिया और अंतर्स्थलीय जल में स्थायी तरीके से मछली की उपज बढ़ाने के लिए प्रबंधन रणनीतियों का मूल्यांकन और सुधार करने के लिए

प्रशिक्षण आयोजित किया गया था। 22 जून 2022 को उद्घाटन सत्र में, डॉ. बि.के.दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और उन्हें रोजगार और आजीविका सुरक्षा उत्पन्न करने के लिए अंतर्देशीय मत्स्य प्रबंधन के ज्ञान और कौशल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया और उन्हें भारत की अंतर्देशीय मत्स्य

पालन की स्थिति के बारे में जानकारी दी। एक सप्ताह तक चलने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम में मछली पालन के विभिन्न विषयों जैसे तालाब निर्माण और तैयारी, जल गुणवत्ता प्रबंधन, प्रेरित प्रजनन तकनीक, समग्र मछली संस्कृति, नर्सरी और पालन तालाब प्रबंधन, मछली रोग प्रबंधन, चारा तैयारी, बाड़े की खेती,और सजावटी मछली पालन तकनीकें पर जोर दिया गया। पानी और मिट्टी की गुणवत्ता के विश्लेषण, मछली के चारे की तैयारी आदि पर व्यावहारिक सत्र हुए और प्रशिक्षुओं को पूर्वी कोलकाता के आर्द्रभूमि में सजावटी मछली बाजार और संस्कृति प्रणालियों, सीआईएफए, कल्याणी के जलीय कृषि क्षेत्रों और कालना में निजी हैचरी के क्षेत्र भ्रमण पर ले जाया गया। . प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में, प्रतिभागियों ने अपनी संतुष्टि व्यक्त की और कहा कि प्रशिक्षण के दौरान उन्हें प्राप्त ज्ञान से उन्हें अपने तालाबों से अधिक मछली उत्पादन प्राप्त करने में मदद मिलेगी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन डॉ. अपर्णा रॉय, डॉ. सजीना ए.एम., डॉ. विकास कुमार एवं श्री सुजीत चौधरी द्वारा किया गया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- आर्द्रभूमि पर निर्भर मछुआरा समुदाय के नियमित आहार में छोटी स्वदेशी मछलियों का प्रतिशत 60% है। आंकड़ों के अनुसार, पश्चिम बंगाल में प्रति व्यक्ति मछली की खपत 19.3 किग्रा प्रति वर्ष और असम में 12 किग्रा प्रति वर्ष है।
- ओडिशा के हीराकुंड जलाशय के अध्ययन पूर्व के आंकड़ों की तुलना में मछली प्रजातियों का संग्रहण घनत्व उच्च (68 प्रजातियां) देखा गया जो महानदी नदी के किनारे देशी मछलियों के आवास स्थल और विस्तार में जलाशयों के महत्व को दर्शाता है।
- ताप्ती नदी के पूरे विस्तार खंड, 724 किमी का आँकलन इसकी मत्स्य पालन क्षमता के लिए किया गया था। इसकी अनुमानित मत्स्य पकड़ लगभग 7000 टन प्रति वर्ष है। नदी से कुल 80 फ़िनफ़िश प्रजातियाँ दर्ज की गई हैं, जिनकी संख्या में कोई कमी नहीं पाई गई। नदी के स्वास्थ्य का आंकलन मछली आधारित जैविक अखंडता सूचकांक (IBI) द्वारा किया गया। नदी के तीन -चौथाई हिस्से में मध्यम स्तर की क्षति देखी गई।
- कर्नाटक में गायत्री जलाशय पारिस्थितिकी तंत्र में शिकार मछली -परभक्षी मछली संबंध (मास बैलेंस मॉडल के उपयोग द्वारा) के अध्ययन से पता चला कि जलीय पक्षी नोटोप्टेरस नोटोप्टेरस, भारतीय मेजर कार्प प्रजातियाँ और ओरियोक्रोमिस नाइलोटिकस का शिकार करते हैं जिससे इनकी उपबद्धता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है ।
- मई 2023 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से अनुमानित मछली लैंडिंग 15.37 टन था, जो मई 2022 की तुलना में कुल मछली पकड़ में लगभग 143% की वृद्धि को दर्शाता है।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 5-7 जून 2023 को कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में "वैश्विक पर्यावरण में बदलती पारिस्थितिकी : चुनौतियां और समाधान" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने 6 जून 2023 को समर मीट-2023 के लिए मत्स्य पालन विभाग, भारत सरकार की मीडिया रणनीति पर अनुवर्ती कार्रवाई पर बैठक में वस्तुतः भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने 13 जून, 2023 को एनएमसीजी, नई दिल्ली में आयोजित एनएमसीजी – सिफरी (भाकृअनुप) चरण-II परियोजना की समीक्षा बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने 14 जून 2023 को भारत सरकार के मत्स्य पालन विभाग के विशेष कर्तव्य अधिकारी द्वारा मत्स्य पालन संस्थानों की समीक्षा बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने 20 जून 2023 को आयोजित वर्ल्ड फिश प्रोजेक्ट की समीक्षा बैठक में भाग लिया।

विविध

- दिनांक 21 जून 2023 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर "वसुधैव कुटुंबकम के लिए योग" थीम पर संस्थान कर्मियों के लिए व्यावहारिक योग सत्र आयोजित किया गया। इसके बाद "स्वास्थ्य लाभ में योग" पर एक व्याख्यान सत्र का आयोजन हुआ।
- नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत संस्थान के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास के मार्गदर्शन में देवप्रयाग, उत्तराखंड में 'राष्ट्रीय रेंचिंग कार्यक्रम-2023' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सिफरी के निदेशक सह श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी, कुलपति, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार और डॉ. संदीप कुमार बेहरा, वरिष्ठ सलाहकार, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में, पतंजलि सेवाश्रम, उत्तराखंड के सहयोग से 10,000 महासीर मछली के अंगुलिकाओं को गंगा नदी में छोड़ा गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- संस्थान ने दिनांक 8 जून, 2023 को मात्स्यिकी महाविद्यालय, लेम्बुचेरा, त्रिपुरा के बी.एफ.एससी चतुर्थ वर्ष के छात्रों के लिए एक एक्सपोज़र विजिट का आयोजन किया, जिसमें 43 छात्रों ने भाग लिया और संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का दौरा किया।
- संस्थान ने दिनांक 8 जून, 2023 को विद्यासागर कॉलेज, कोलकाता, पश्चिम बंगाल के एमएससी चतुर्थ सेमेस्टर जूलॉजी ऑनर्स के छात्रों के लिए एक्सपोज़र विजिट का आयोजन किया। इसमें 13 छात्रों ने भाग लिया और संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का दौरा किया।
- संस्थान ने दिनांक 13 जून, 2023 को उदयपुर हरदयाल नाग आदर्श महिला विद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल के नौवीं कक्षा के छात्रों के लिए एक्सपोज़र विजिट का आयोजन किया जिसमें 36 छात्राओं ने भाग लिया। छात्राओं ने विभिन्न प्रयोगशालाओं, सजावटी मछली पालन इकाई का दौरा किया और उन्हें मत्स्य पालन क्षेत्र में भावी अवसरों पर जागरूक किया गया।
- संस्थान द्वारा झारखंड के पगला घाट, राजनगर घाट और कमालतीपुर मछली घाट पर 9 हिल्सा और डॉल्फिन संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। जागरूकता कार्यक्रमों के दौरान 154 मछुआरों की सक्रिय भागीदारी देखी गई और अधिकतम मछुआरे अनुसूचित जाति समुदाय के थे।

अन्य

- जलाशय में घेरे में पालन शुरू करने की संभावना का पता लगाने के लिए डिकचू जलाशय, सिक्किम में एक संयुक्त क्षेत्र का दौरा किया गया था। इसमें संस्थान के निदेशक; निदेशक, मत्स्य पालन, सिक्किम सरकार तथा सम्बद्ध अधिकारियों की वैज्ञानिक टीम के साथ जलाशय में संभावित स्थलों का दौरा किया।
- संस्थान ने 1 जून 2023 को अनुसूचित जाति उप-योजना के तहत मिरिक, दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल में पहाड़ी क्षेत्र के लिए सजावटी मछली पालन के माध्यम से आय सृजन और आजीविका विकास कार्यक्रम शुरू किया है । इसके अंतर्गत संस्थान ने 50 अनुसूचित जाति लाभार्थी मछुआरों को एफआरपी टैंक, मछली, चारा और अन्य सहायक उपकरण जैसे इनपुट वितरित किए।

सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

गढ़निनाद

देश-दुनिया शासन-प्रशासन आपदा शिक्षा जगत हॉलीवुड/बॉलीवुड साइंस & टेक्नोलॉजी हेल्थ & फि

देवप्रयाग में महाशीर मछलियों का रैंचिंग सह जनजागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

16 June 2023

Please click to share News

टिहरी गढ़वाल 16जून 2023। गंगा नदी में विलुप्त हो रहे मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण एवम् संवर्धन को ध्यान में रखते हुए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् -केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), प्रयागराज के द्वारा दिनांक 16 जून 2023 को, देवप्रयाग के पवित्र पावन अलकनंदा नदी पर पतंजलि सेवाश्रम के प्रांगण में महाशीर मछलियों का रैंचिंग सह जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

ICAR-CIFRI, Directorate of Fisheries join hands to boost fish production in Sikkim

GANGTOK, May 29:

Generating alternative livelihood options for tribal w... Birbhum, West Bengal: An initiative by ICAR-CIFRI

Kolkata, (KCN):Birbhum district is one of the disadvantaged districts of West Bengal with an extreme climate leaving maximum agricultural land dry most of the time in a year. The ST population comprises almost 7% of the total population of the district. Keeping this in view, ICAR-CIFRI took the initiative to stand by the rural populace belonging to the ST community by extending its support in terms of fisheries inputs

THE KALINGA CHRONICLE — Popular people's Daily of Odisha — BHUBANESWAR, FRIDAY, 07 JULY, 2023 — METRO CITY 2

ICAR-CIFRI comes Forward to Provide Alternative Livelihood to Tribal Women of Birbhum in Ornamental Fish Farming

Kolkata,(KCN):Birbhum is one of the disadvantaged districts of West Bengal with an extreme climate leaving maximum agricultural land dry most of the time in a year. The ST population comprises almost 7% of the total population of the district. Keeping this in view, ICAR-CIFRI took the initiative to stand by the rural populace belonging to the ST community by extending its support in terms of fisheries inputs as well as technical know-how for generating an alternative livelihood option.

After the first wave of COVID-19 pandemic, CIFRI, in collaboration with Rathindra KVK, selected a total of 152 beneficiaries from 16 different SHGs working within the jurisdiction of Rathindra KVK, Sriniketan and extended support through providing fish seed, fish feed and lime under STC and SCSP component since 2021. In this connection, CIFRI has taken a new initiative to support the rural ST women in developing their knowledge and skill in ornamental fish farming practices for generating alternative livelihood options. This initiative is a part of CIFRI's 'Mission 3000', which aims to cover 3000 women across the country with active support for their economic empowerment. For this purpose, CIFRI organised

an Input Distribution and Demonstration programme on Ornamental Fish Farming under STC on July 4, 2023 at the campus of Rathindra KVK, Shrniketan, Birbhum.

Dr. B. K. Das, Director, ICAR-CIFRI along with his 'team' including scientists, technical staff, and research scholar distributed inputs, sensitized the women, and demonstrated the techniques of ornamental fish farming in tanks. Besides, Prof. Arun Barik, Principal, PSB, Visva Bharati, Dr. Gunin Chattopadhyay, Former professor, Visvha Bharati, Dr. Subroto Mandal, Programme Coordinator, Rathindra KVK and Sri K. Mukherjee, District Fishery Officer from the State Fisheries Department were also present in the programme. On this occasion, ornamental fish along with ornamental fish tanks and ornamental kits were distributed to 30 tribal women from various villages of the district. The main objective of the programme was to support the tribal women of this district and uplift their income level as well as livelihood.

The programme was successfully conducted under the patronage of the Director of ICAR-CIFRI keeping a satisfactory smile on the faces of the tribal women participants.

DAV, KALINGA NAGAR OBSERVES ITS 27th FOUNDATION DAY

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है